विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

घरों में पार्किंग की गंभीर होती समस्या

भले ही यह बात थोड़ी अजीब अवश्य लगे पर अब शहरों में घरेलू या यों कहें कि निजी चौपहिया वाहनों की पार्किंग की समस्या गंभीर होती जा रही है। यह भी सही है कि यह समस्या केवल और केवल हमारे महानगरों की ही नहीं अपितु दुनिया के अधिकांश देशों के सामने तेजी से विस्तारित होती जा रही है। दुनिया के देश चौपहिया वाहनों की पार्किंग समस्या से दो-चार हो रहे हैं और इस समस्या के समाधान के लिए अनेक विकल्पों पर मंथन कर रहे हैं। यहां तक कि पार्किंग शुल्क से अच्छी-खासा आय होने लगी है। अकेले भारत की ही बात करें तो देश में करीब पांच करोड़ कारें चलन में हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार दिल्ली में उपलब्ध कारों की पार्किंग के लिए ही चार हजार से अधिक फुटवाल के मैदानों जितनी जगह की आवश्यकता है। अगर दिल्ली की ही पार्किंग से आय की बात करें तो यह कोई 9800 करोड़ से अधिक की हो जाती है। देश के किसी भी कोने में किसी भी शहर की गलियों में निकल जाएं तो देखेंगे कि गलियों में घरों के बाहर सड़क की आधी जगह तो कारों के पार्किंग से ही सटी होती हैं। यानी कि एक ही घर में एक से अधिक कार/वाहन होना अब आम होता जा रहा है। किसी भी शहर में आफिस या बाजार खुलने बंद होने के समय तो जाम लग जाना आम होता जा रहा है। यह सब तो तब है जब देश में आबादी की तुलना में यह माना जा रहा है कि कारों की संख्या कम है। आने वाले सालों में कारों की संख्या में इजाफा ही होगा। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। यातायात के हालात यह होते जा रहे हैं कि कई बार तो चंद कदमों की दूरी पार करने में ही लंबा समय लग जाता है।

दरअसल इस सबके अनेक कारणों में से उपनगर विकसित करने पर ध्यान नहीं देना, व्यस्ततम स्थानों पर ही बहुमंजिला इमारतें बनाने की छूट देना, शहरी सार्वजनिक यातायात तंत्र का विकसित नहीं होना, वाहनों की खरीद सहज होना और वाहनों की पार्किंग के लिए दूरगामी योजना का अभाव होना भी एक माना जा सकता है। अब तो हालात यहां तक होने लगे हैं कि पार्किंग को लेकर झगड़ा या यों कहें कि जानलेवा विवाद होना तक आम होता जा रहा हैं। रोडरेज की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी हैं। दरअसल चौपहिया वाहनों की जिस तरह से सुगम ऋण सुविधा व पैसों के तेजी से बढ़ते प्रवाह के कारण सहज पहुंच हुई है उसका एक सकारात्मक परिणाम यह सामने आया हैं कि जिस तरह से अमीर गरीब सभी के लिए मोबाइल आम होता जा रहा हैं ठीक उसी तरह से चौपहिया वाहन आम होता जा रहा हैं। जहां तक पैसों वालों का प्रश्न है तो उनके घरों में एक से अधिक वाहन होना तो सामान्य बात है। तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि थोड़ी सी भी अच्छी माली हालत वाले लोग अब मंहगी और यूएसवी एमएसवी वाहनों की और शिफ्ट करते जा रहे हैं। किसी भी शहर की गलियों में आधा फुटपात तो वाहनों की पार्किंग के कारण ही देखा जा सकता है। लोगों के सोच या डिमांड में भी अंतर आया है और अब लोग छोटी कार लेना पसंद ही नहीं करते। नैनों जैसी छोटी कार के परिणाम हमारे सामने हैं। घर में जगह नहीं होने के कारण सड़कों पर ही गाड़ियां खड़ी करनी पड़ती है।

दरअसल इस सबके अनेक कारणों में से उपनगर विकसित करने पर ध्यान नहीं देना, व्यस्ततम स्थानों पर ही बहुमंजिला इमारतें बनाने की छूट देना, शहरी सार्वजनिक यातायात तंत्र का विकसित नहीं होना, वाहनों की खरीद सहज होना और वाहनों की पार्किंग के लिए दूरगामी योजना का अभाव होना भी एक माना जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय उर्जा एजेंसी की माने तो 2050 तक दुनिया के देशों में केवल और केवल कारों की पार्किंग के लिए ही 80 हजार वर्ग किलोमीटर स्थान की आवश्यकता होगी। यानी इतनी जगह कि छोटा-मोटा देश से आसानी से इस जगह में समा सके। हांलाकि पुराने कबाड़ को लेकर दुनिया के देशों की सरकारें योजनाएं बना रही हैं पर यह भी अपने आप में एक समस्या बनती जा रही है। खैर इस पर अलग से बहस हो सकती है। पर सवाल वहीं का वहीं है कि कार कारोबार में अभी तेजी आनी ही है। ऐसे में शहरी विकास संस्थाओं और योजना नियंताओं को निजी कारों की पार्किंग को लेकर ठोस कार्ययोजना तैयार करनी ही होगी। मजे की बात यह है कि अब कार बाजार इलेक्ट्रिक कारों में शिफ्ट होता जा रहा है, ऐसे में चार्जिंग स्टेशनों के लिए भी जगह तलाशनी ही होगी। क्योंकि देर सबेर कारों का यह कारोबार ईवी में ही शिफ्ट होना है। यदि पार्किंग स्थलों पर ही चार्जिंग की व्यवस्था होगी तो समस्या का थोड़ा समाधान देखा जा सकेगा।

दरअसल अब समय आ गया है जब किराए के मकानों की तरह किराए के पार्किंग स्थल बनाए जाएं और वहीं पर कारों से संबंधित आवश्यक आवश्यकताओं की भी पूर्ति हो सके। जैसे हवा-पानी, सामान्य रिपेयर, साफ-सफाई, चार्जिंग आदि की सुविधाएं हो। इस तरह की पेड पार्किंग स्थानों पर ऑटोमेटिक बहुमंजिला पार्किंग व्यवस्था हो तो और भी अधिक सुविधाजनक हो सकती है। बहु मंजिला इमारतों और माल्स में भी पार्किंग की अधिक सुविधा होना समय की मांग हो गई है। दरअसल इस सबके लिए समय रहते दूरगामी नीति बनानी होगी ताकि समस्या सुरसा के मुंह की तरह बढ़ नहीं जाएं। वास्तुकारों और नियोजकों के लिए यह अपने आप में चुनौतीपूर्ण काम हो गया है। सवाल यह भी होगा कि किराए की पार्किंग व्यवस्था सस्ती व सहज उपलब्धता वाली भी होनी चाहिए। यहां किराए की पार्किंग व्यवस्था से आशय कहीं भी यह नहीं निकाला जाना चाहिए कि बाजारों या सार्वजनिक स्थानों पर कुछ समय के लिए जाने वालों के वाहनों की पार्किंग व्यवस्था बल्कि यह समस्या आवासीय कालोनियों के वाहनों को लेकर आने वाली है और उसी को लेकर भी चिंता की आज ही बड़ी आवश्यकता हो गई हैं। इसे नकारा या यों कहें कि आंख मूंदा नहीं जा सकता। अब कोलोनाइजरों को भी इस दिशा में पहले से ही रोडमेप बनाकर चलना होगा नहीं तो आने वाले समय में यह एक और नई समस्या दस्तक देने वाली है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

उत्तरप्रदेश के भदोही से जोधपुर के सालावास में आई सालावास दरी

पन्नालाल मेघवाल

उत्तर प्रदेश के भदोही जिले में दरी बनाने का काम बड़े पैमाने पर किया जाता था। लगभग 50 वर्ष पूर्व श्याम अहूजा भदोही से जोधपुर से 35 किलोमीटर दूर सालावास गांव आए। उन्होंने यहां आकर दरी बनाने का हस्त-उद्योग स्थापित किया। सर्वप्रथम सालावास में कूसाराम, मालाराम, भोलाराम, भगवान प्रजापत आदि ने दरी बुनाई का कार्य सीखा। इसके बाद सालावास में लगभग 100 घरों में सालावास दरी बुनने का कार्य होने लगा। सालावास में ऐसी नायाब दरियां बनने लगी कि यहां की दरी देश-विदेश में प्रसिद्ध हो गई। परिणाम स्वरूप नागौर, बीकानेर, जोधपुर, जालौर जिलों में भी ये दरियाँ बनाई जाने लगी। यहां की दरियां भी सालावास दरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। सालावास दरी लकड़ी व लोहे के हाथ से बने लूम पर बुनी जाती है। ज्यों-ज्यों बुनाई के धागे की पंक्ति पूरी होती है उसे लकड़ी के बने पंजे से आगे खिसकाया जाता है। पंजे के उपयोग के कारण इसे पंजा दरी भी कहते है।

सालावास की दरी सूती धागे से ही बनाई जाती है, लेकिन विशेष मांग पर यहां ऊनी एवं सिल्क के धागे से भी बनाई जाती है। सालावास दरी मुख्यत: हाथ की तकनीक से बने मोटे धागों से ताणा' पर बुनाई करके बनाई जाती है। यह दरी 'सालावास' ग्राम में प्रजापत समुदाय के बुनकरों द्वारा बनाई जाती है। इसलिए इसे 'सालावास' दरी के नाम से जाना जाता है।

सालावास दरी बुनाई के लिए अधिक संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती है। मात्र दो मोटी किस्म की बल्लियां दरी की लम्बाई चौडाई अनुसार आड़ी लगाई जाती है। मोटे धागों की लडियों को उसके पास छोटी किस्म की बल्लियों पर 'ताणा' बाधां जाता है। यह लम्बवत दिशा में बल्ली से दूसरी बल्ली पर लपेटा जाता है। इन बल्लियों के चारो सिरों की लकड़ी को खूटों से कसकर बांधा जाता है, जिन्हें 'तीनीया' कहते हैं।

दरी बनाने वाला बुनकर 'ताणा' के ऊपर 'भौ' बनाता है। यह दो लकडियों का बना होता है जो 'ताणे' के ऊपर छत से लटका रहता है। उसमें विभिन्न तरह के रंगीन धागों को ताणे में फसाते हुए

डिजाईन बनाई जाती है। 'भौ' ऊपर से नीचे की ओर अर्थात दरी को ऊपर से नीचे तक वांछित डिजाईनों में बुनकर द्वारा बुनी जाती है।

वर्तमान में मशीनों द्वारा दरी बुनाई एवं इस उद्योग को व्यापारियों द्वारा अपने हाथ में लेने के कारण सालावास दरी बुनाई के शिल्पकारों को आर्थिक मंदी के दौर से गुजरना पड़ रहा है। पहले सालावास में बड़े पैमाने पर हस्त निर्मित दरियां बनाई जाती थी, लेकिन अब यह कार्य सीमित परिवार ही कर रहे हैं।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

रणथम्भौर में दो शावकों के साथ दिखी ''बाघिन टी-69''

सवाई माधोपुर, (निसं)। रणथम्भौर नेशनल पार्क के खंडार क्षेत्र में बाघिन टी-69 कुछ दिन पूर्व अपने दो शावकों के साथ नजर आई।

यह बाघिन 24 मई को फिर वन कर्मियों को नजर आई। यह बाघिन टी-30 की बेटी है। जिसकी उम्र लगभग 12 वर्ष है। बाघिन टी-69 चौथी बार मां बनी है। बाघिन टी-69 के मां बनने से वन्यजीव प्रेमियों में खुशी का माहौल है।

डी.एफ.ओ. मोहित गुप्ता ने बताया कि वन विभाग के फिल्ड स्टाफ को दोनों शावकों की कड़ी सुरक्षा एवं मॉनिटरिंग के निर्देश दिए है। दोनों शावक 2 दो माह के बताये गए है। दूसरी तरफ वन विभाग ने इन की कड़ी सुरक्षा कर दी है।

बाघिन टी-69 रणम्भौर के खंडार क्षेत्र में दो शावकों के साथ वन कर्मियों को दिखाई दी।

आंदोलन की तैयारी जोरों पर

चूरू, (कासं)। अखिल भारतीय किसान सभा के नेतृत्व में सावनी सहित बकाया बीमा क्लेम को लेकर किसान सभा जिलेभर में पिछले 1 साल से आंदोलन पर है, लेकिन जिला कलेक्टर के साथ चक्का जाम के बाद हुए समझौते में बीमा क्लेम क्रॉप कटिंग के आधार पर देने की सहमति बनी, लेकिन बीमा कंपनी व सरकारें किसान के बीमा क्लेम को हड़पना चाहती है। किसान सभा के जिलाध्यक्ष इंद्राज सिंह ने बताया कि 2017 से अब तक करोड़ों अरबों रुपए किसानों के बकाया पड़े हैं। इसको लेकर किसान सभा जिला मुख्यालय चूरू कलेक्ट्रेट पर 2 जून को जिले के किसान पैदल मार्च कर कलेक्ट्री पहुंचेंगे, जिले का यह ऐतिहासिक आंदोलन होगा। किसान सभा के तहसील उपाध्यक्ष रामकृष्ण छिंपा ने बताया कि 2 जून को जिला कलेक्ट्रेट का अनिश्चितकालीन घेराव किया जाएगा।

पानी की समस्या को लेकर लोगों का जलदाय विभाग कार्यालय पर प्रदर्शन

चिड़ावा, (निसं)। लंबे समय से पेयजल समस्या से जूझ रहे शहर के वार्ड 38 में भगतों का मोहल्ला निवासी

- **अधिकारियों और कर्मियों ने जल्द समस्या का स्थायी समाधान का आश्वासन दिया**

वार्डवासियों ने एक बार फिर जलदाय कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन किया। गुस्साए वार्डवासियों ने बताया कि उनके वार्ड में लंबे समय से पेयजल समस्या है।

हफ्तेभर पहले अधिकारियों को मिलकर बताया था कि भगतों के मोहल्ले में पुरानी राजकीय प्राथमिक स्कूल के पास चार माह से पानी नहीं आ रहा। 17 मई को अधिकारियों ने पांच दिन में समस्या का समाधान करने की बात कही। लेकिन अब तक सुध नहीं ली।

वार्डवासियों के आक्रोश को देखते हुए अधिकारियों और कर्मियों ने वार्डवासियों का गुस्सा शांत करवाया और जल्द से जल्द समस्या का स्थायी समाधान का आश्वासन दिया। वार्डवासियों ने बताया कि वार्ड में बने ट्यूबवेल में और पाइप लाइन डालने की आवश्यकता है। इससे पानी की सप्लाई सुचारू हो सकेगी। अधिकारियों ने मौका देखकर जल्द कार्यवाही का भरोसा दिया। जिसके बाद लोगों का गुस्सा शांत हुआ।

इस दौरान वार्ड के मनजीत, राहुल, कुणाल, अमित, अशोक, नत्थुराम, नरेंद्र, अंकित, भीमसिंह, मंगलचंद, अजय कुमार, ऋतिक, जीवनी, अनिता, विमला, राजबाला, रेखा, सावित्री, दुर्गा, सुमित्रा, चमेली, सुनीता सहित वार्डवासी मौजूद रहे।

चिड़ावा शहर के वार्ड 38 में भगतों का मौहल्ला निवासियों ने जलदाय कार्यालय पर प्रदर्शन किया।

56 लाख रुपये खर्च के बावजूद पहली बरसात में ही टपकने लगी चिकित्सालय की छत

सुजानगढ़, (निसं)। मौसम की पहली बरसात ने नव उद्घाटित श्री दुर्गादत फतेहपुरिया राजकीय मातृ एवं शिशु चिकित्सालय के जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण की पोल खोल कर रख दी।

- **दो दिन पहले विधायक ने किया था मातृ एवं शिशु चिकित्सालय का लोकार्पण**

जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण के बाद दो दिन पहले 22 मई सोमवार को ही विधायक मनोज मेघवाल ने मातृ एवं शिशु चिकित्सालय का लोकार्पण किया था। इस अवसर पर आयोजित समारोह में पीएमओ डॉ. सुरेश कालानी ने बताया कि विधायक कोटे के 35 लाख एवं भामाशाह फतेहपुरिया परिवार के 21 लाख यानि की कुल 56 लाख रूपये की लागत से जीर्णोद्धार करवाया गया है। लेकिन अफसोस की बात है कि जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण पर 56 लाख रूपये खर्च करने के बाद भी पहली बरसात में ही अस्पताल की छत टपकने लगी है।

बुधवार को हुई भारी बरसात के बाद एमसीएच के एनबीएसयु यानि की न्यू बोर्न स्टेबलाइजिंग युनिट की छत टपकने लगी। युनिट में नवजात शिशुओं के लिए रखी लाखों रूपए की मशीनों एवं डीप फ्रिजरों को छत से टपकने वाले पानी से बचाने के लिए स्टाफ के पास कोई साधन नहीं थे। स्टाफ ने अपनी व्यवस्थानुसार एक डीप फ्रिज पर एक ट्रे रख रखी थी, जिसके भर जाने पर उसे ही बार-बार खाली कर किसी प्रकार काम चलाया जा रहा था। वहीं अस्पताल के बाहर चारों तरफ पानी भरने से अस्पताल में मरीजों के आवागमन का रास्ता पूरी तरह से बंद हो गया।

गांव जीली की महिलाओं ने बताया कि चिकित्सकों ने उन्हे सुबह ही छुट्टी दे दी, लेकिन अस्पताल प्रशासन द्वारा घर भेजने का साधन नहीं उपलब्ध करवाने के कारण उन्हे यहां मजबूरन रूकना पड रहा है।

एमसीएच को शुरू करने के लिए करीब दो साल पहले जब प्रयास शुरू हुए तो नगरपरिषद सभापति एवं आयुक्त द्वारा ठरडा रोड से अस्पताल तक सडक बनाने का वादा किया गया था, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि जीर्णोद्धार के बाद उद्घाटन होकर अस्पताल तो शुरू हो चूका है, लेकिन यह सडक अभी तक कागजों से जमीन पर नहीं उतरी है। सडक नहीं होने तथा जल भराव के कारण अस्पताल तक एक भी वाहन के नहीं पंहूच पाने से अस्पताल में भर्ती मरीज एवं उनके परिजन परेशान हो रहे हैं।

सुजानगढ़ में नव उद्घाटित श्री दुर्गादत फतेहपुरिया राजकीय मातृ एवं शिशु चिकित्सालय के न्यू बोर्न स्टेबलाइजिंग यूनिट की छत टपकने लग गई।

राशिफल गुरूवार 25 मई, 2023

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, पुष्य नक्षत्र सांय 5:53 तक, वृद्धि योग सांय 6:07 तक, कौलव करण सांय 4:10 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मेष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग और गुरू पुष्य योग सूर्योदय से सांय 5:33 तक है। रवियोग आज सांय 5:33 तक है। रात्रि 8:59 से पुन: आरम्भ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:20 तक, चर 10:43 से 12:24 तक, लाभ-अमृत 12:24 से 3:46 तक, शुभ 5:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:08

मेष

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या

आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मकर

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

कुंभ

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कर्क

मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। शुभ कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।